02 फरवरी 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन

पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक समयसार पर

वर्ष : 44, अंक : 18
फरवरी (प्रथम), 2022 (वीर नि.संवत्-2548)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान का भव्य आयोजन

कोलारस (म.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन एवं मुमुक्षु मण्डल, कोलारस के संयुक्त आयोजकत्व में '**श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान**' श्री आदिनाथ जिनालय में 10 जनवरी से 14 जनवरी, 2022 तक सानन्द सम्पन्न हुआ।

ध्वजारोहणकर्ता श्री धर्मेन्द्रजी-संजीवजी चौधरी कोलारस, मण्डप उद्घाटनकर्ता श्री अशोकजी-कपिलजी रन्नौद, विधान उद्घाटनकर्ता श्री शान्तिशरणजी-विवेकजी जैन कोलारस एवं मुख्य कलश विराजमानकर्ता श्री राजमलजी-देवेन्द्रजी जैन थे।

इस अवसर पर जयपुर से पधारे युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के प्रतिदिन प्रात: समयसार एवं रात्रि में संयमप्रकाश पर विशेष प्रवचनों के अतिरिक्त बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, डॉ. विवेकजी शास्त्री इंदौर, पण्डित अमितजी शास्त्री गुना, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री कोलारस के प्रवचनों का लाभ भी मिला।

साथ ही विधि-विधान के समस्त कार्य प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना एवं डॉ. विवेकजी शास्त्री इंदौर द्वारा सम्पन्न कराए गए।

दैनिक कार्यक्रम में जिनेन्द्र प्रक्षाल, श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान, प्रवचन, पण्डित मांगीलालजी कोलारस द्वारा जिनेन्द्र भक्ति, श्री सुबोधजी ग्वालियर द्वारा भजन संध्या, राजसभा, कवि सम्मेलन, 'सम्पदा से कौन सुखी?' विषय पर नाटक आदि रोचक कार्यक्रम हुए।

आयोजन की व्यवस्थाएँ श्री देवेन्द्रजी जैन, श्री सुदीपजी जैन, श्री सन्मतिजी जैन, श्री धर्मेन्द्रजी जैन, श्री प्रशान्तजी जैन एवं समस्त स्थानीय शास्त्री विद्वानों ने तथा तकनीकी व्यवस्थाएँ कु. रौशनी कंदी औरंगाबाद, आर्जव गोधा जयपुर एवं सनत जैन कोलारस ने सम्भाली।

समस्त कार्यक्रमों का लाइव प्रसारण DrSanjeevgodha यूट्यूब चैनल पर किया गया।

समयसार कलश विधान व कीर्तिस्तम्भ-स्थापना

शिवपुरी (म.प्र.) : यहाँ 16 से 19 जनवरी, 2022 तक श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन परमागम मन्दिर ट्रस्ट के सौजन्य से श्री वासुपूज्य दिगम्बर जिन मन्दिर में नवम् वार्षिक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा रचित '**श्री समयसार कलश महामण्डल विधान**' सम्पन्न हुआ।

मंगल कलश शोभायात्रा से प्रारम्भ इस समारोह में ध्वजारोहणकर्ता श्री रमेशचन्द्र-राजेशजी चौधरी परिवार कोलारस, प्रवचन मण्डप उद्घाटनकर्ता श्री विनोदकुमार-विनीतजी शास्त्री परिवार पोहरी एवं विधान उद्घाटनकर्ता श्री सुरेशचन्द्रजी सर्राफ शिवपुरी थे।

प्रतिदिन पूजन-विधान, गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन, जिनेन्द्र भक्ति, कथा-वाचन आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए। मुख्य विद्वान के रूप में अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के दोनों समय प्रवचनों के अतिरिक्त विधानाचार्य पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अशोकजी शास्त्री मांगुलकर व पण्डित जयकुमारजी कोटा के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य विधानाचार्य पण्डित विरागजी जबलपुर, पण्डित अभिनयजी जबलपुर ने कराए। सम्पूर्ण विधान के भाव को डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा सरलता से स्पष्ट किया गया।

इस अवसर पर कहान समयसार सम्प्राप्ति शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में '**समयसार कीर्तिस्तम्भ**' स्थापित किया गया, जिसके भेंटकर्ता श्रीमती नीरज-शैलेशजी जैन जैसवाल, श्री प्रेमचन्द्रजी जैन धागा, श्री जयकुमारजी रामगढ़ एवं श्री अनिलजी जैन 'शिक्षक' थे।

सम्पूर्ण कार्यक्रम में श्री नवीनजी लुकवासा, श्री ओमप्रकाशजी जैन, श्री शैलेशजी जैन, श्री वीरेन्द्रजी जैन, श्री नीरजजी चौधरी, श्री वीरेन्द्रजी चौधरी, श्री मंत्रकुमारजी जैन आदि का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

– जयकुमार जैन

(30) सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

सातवें अध्याय का सार (जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचन)

मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रन्थ का सबसे बड़ा यह सातवाँ अधिकार है। इस अधिकार में तर्क, युक्ति, न्याय भी बहुत गहरे अर्थ को स्पष्ट करने वाले हैं और बहुत सूक्ष्मता से प्रतिपादित किए गए हैं। टोडरमलजी का जो मौलिक चिन्तन है, वह भी इस सातवें अध्याय में विशेष रूप से निखर कर सामने आया है। इसमें प्रश्नोत्तर शैली के माध्यम से समाज में चल रही एवं जीवन में दिखने वाली सूक्ष्म भूलों को दूर करने का प्रयत्न किया गया है।

गुरुदेवश्री इस अध्याय के सन्दर्भ में कहते थे कि प्रत्येक आत्मार्थी जीव को साल में एक बार तो सातवें अध्याय को पढ़ना ही चाहिए। जब हम सातवें अध्याय को पढ़ते हैं तो उसमें एक-एक वाक्य, एक-एक शब्द महत्त्वपूर्ण दिखाई देता है।

इस सातवें अधिकार में भी मिथ्यात्व का ही वर्णन है; परन्तु जो जैन कुल में पैदा हुए हैं, जिन आज्ञा को मानते हैं उसके बाद भी उनके मिथ्यात्व कैसे रह जाता है? इसका वर्णन यहाँ पर किया गया है। जैन कुल में पैदा होने वाले जीवों की चर्चा तो पूर्व में भी की है; परन्तु जो जीव जिन आज्ञा को मानते हैं उन जीवों को आधार बनाकर यहाँ चर्चा कर रहे हैं।

पण्डितजी मिथ्यादृष्टियों को चार भागों में विभाजित करते हैं–

1) निश्चयाभासी मिथ्यादृष्टि 2) व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि
3) उभयाभासी मिथ्यादृष्टि 4) सम्यक्त्व सन्मुख मिथ्यादृष्टि

ये सभी शास्त्रों के पाठी होने पर भी ज्ञानी नहीं हैं; क्योंकि उसके मूल भाव को नहीं जानते। पण्डितजी मंगलाचरण में भव का मूलकारण मिथ्यात्व को बतलाकर अब उसे निर्मूल करने की बात करते हैं अर्थात् जो सूक्ष्म भूलें रह गई हैं, उन्हें दूर कराते हैं।

जिनागम में निश्चय-व्यवहार रूप वर्णन है। जो जीव इनके यथार्थ स्वरूप को नहीं जानते, अन्यथा प्रवर्तन करते हैं, उनके स्वरूप को बताने के लिए यहाँ सबसे पहले प्रकार के मिथ्यादृष्टियों का स्वरूप बताते हैं –

निश्चयाभासी का स्वरूप...

कितने ही जीव निश्चय को न जानते हुए निश्चयाभास के श्रद्धानी होकर अपने को मोक्षमार्गी मानते हैं तथा अनेक विपरीत मान्यताएँ पालते हैं। यहाँ निश्चयाभासी की अनेक विपरीत मान्यताओं को पण्डितजी अलग-अलग बिन्दुबार बताकर उनका तर्क संगत निराकरण करते हैं –

1) अपने को सिद्ध सामान शुद्ध मानता है; यद्यपि यह बात सच्ची है, शास्त्रों में कही गई है। 'सिद्ध समान सदा पद मेरो' परन्तु यह जीव जिनागम की कथन पद्धति को न समझने के कारण विपरीत अर्थ ग्रहण करता है। कथन दो प्रकार से होते हैं – एक द्रव्यदृष्टि से और दूसरा पर्यायदृष्टि से। यहाँ पण्डितजी कहते हैं कि यदि तू द्रव्यदृष्टि से सिद्ध समान कहता है तो हमें कोई आपत्ति नहीं है; परन्तु वर्तमान अवस्था में प्रत्यक्ष प्रकट संसारी दिखने पर भी यदि सिद्ध समान शुद्ध मानता है, तो यह तेरी महाभूल है। जैसे – राजा और रंक मनुष्यपने की अपेक्षा से तो समान है; लेकिन राजापने और रंकपने की अपेक्षा से समान नहीं है। वैसे ही सिद्ध और संसारी जीवत्व की अपेक्षा से तो समान है; परन्तु सिद्धपने और संसारीपने की अपेक्षा से समान नहीं है।

2) वर्तमान में अपने में केवलज्ञान आदि का सद्भाव मानता है। यद्यपि शास्त्रों में स्वभाव व शक्ति की अपेक्षा से प्रत्येक जीव में केवलज्ञान का सद्भाव कहा गया है; परन्तु वर्तमान में तो मति-श्रुत ज्ञान का सद्भाव है। क्षायिक ज्ञान तो कर्मों के क्षय होने पर प्रकट होता है और कर्म का क्षय हुए बिना ही केवलज्ञानी मानता है, तो यह इसकी बहुत बड़ी भूल है।

यहाँ कोई कहे कि शास्त्रों में तो सूर्य और मेघपटल का उदाहरण देकर ज्ञान का सद्भाव बताया है? उससे पण्डितजी कहते हैं कि दृष्टान्त तो एक अंशमात्र में लागू होता है सर्वप्रकार से नहीं। जहाँ सूर्य का दृष्टान्त दिया है, वहाँ इतना ही समझना कि जैसे मेघपटल होने पर सूर्य का प्रकाश प्रकट नहीं होता; वैसे ही कर्म का उदय होने पर केवलज्ञान नहीं होता। यहाँ **ऐसा नहीं समझना** कि जैसे सूर्य में प्रकाश सदा बना रहता है, वैसे ही आत्मा में केवलज्ञान भी सदा बना रहता होगा और ज्ञानावरण कर्म के कारण प्रकट नहीं दिखता।

वस्तुत: बात तो यह है कि इन कर्मों में ऐसी सामर्थ्य ही कहाँ है, जो केवलज्ञान को रोक सकें। केवलज्ञान की तो ऐसी दिव्यता है कि यदि वज्र की दीवार भी आड़े आ जाए तो उसे रोकने में समर्थ नहीं है।

यहाँ कोई कहे कि यदि केवलज्ञान किसी से रोका नहीं जा सकता तो आवरण शब्द से क्या तात्पर्य है? पण्डितजी कहते हैं कि शक्ति को व्यक्त नहीं होने देना अर्थात् कर्म के उदय होने पर केवलज्ञान व्यक्त नहीं होने का नाम ही केवलज्ञान-आवरण है। केवलज्ञान प्रकट हो और वह आवरण के कारण जान नहीं पाए – ऐसा नहीं हो सकता।

इसप्रकार जो आत्मा को वर्तमान संसार अवस्था में ही केवलज्ञान आदि रूप अनुभव करते हैं, वे मिथ्यादृष्टि हैं।

3) अपने को रागादि भावों का सद्भाव नहीं मानता। संसारमार्गी होने पर भी वीतरागी मानता है; यद्यपि समयसार आदि ग्रन्थों में आत्मा को रागादि से भिन्न कहा गया है; परन्तु वह परमार्थ की अपेक्षा से कहा गया है।

पण्डितजी समयसार कलश के आधार से कहते हैं कि चूँकि राग भी एक कार्य है, अत: वह किसी ना किसी के द्वारा किया गया होना चाहिए। यदि उसे कर्म द्वारा किया गया माना जाए, तो वह अचेतन सिद्ध होगा। यदि कर्म और जीव दोनों के द्वारा किया गया माना जाए, तो उसका फल भी दोनों को भोगना पड़ेगा; परन्तु फल तो मात्र जीव ही भोक्ता है; इसलिए यह सिद्ध हुआ की रागादि भाव जीव के ही हैं। यह निश्चयाभासी स्वयं निरुद्यमी होने के लिए रागादि होने में कर्मों का दोष बताता है। यही इसकी बड़ी भूल है।

आचार्य अमृतचन्द्र ने तो यहाँ तक कह दिया कि जो जीव रागादि की उत्पत्ति में परद्रव्य ही का निमित्तपना मानते हैं, वे जीव शुद्धज्ञान से रहित अन्धबुद्धि हैं और वह मोह नदी के पार नहीं उतरते।

पण्डितजी का शिष्य भी शास्त्रों को पढ़ने वाला है; इसलिए समयसार कलश का प्रमाण देकर अपना पक्ष रखते हुए कहता है कि – वर्णाद्या वा रागमोहादयो वा भिन्ना भावा: सर्व एवास्य पुंस:। अर्थात् वर्णादि अथवा रागादि सभी भाव आत्मा से भिन्न हैं।

पण्डितजी कहते हैं कि राग से तन्मयता छोड़ने के लिए राग को परद्रव्य कहा गया है, वास्तव में राग कोई पर द्रव्य नहीं है। रागादि मेरे स्वभाव भाव नहीं है; इसलिए उसे आत्मा से भिन्न कहा है और वे परद्रव्य (पुद्गल) के निमित्त से उत्पन्न होते हैं; इसलिए उसे पुद्गल का कहा जाता है। यदि राग को पर न जानें तो उसके नाश का उपाय नहीं करे। और यदि इसे सर्वथा ही पर का मान लेवे तो फिर उसके नाश की जरूरत ही नहीं समझेगा। इसप्रकार दोनों ही स्थितियों में उसे मोक्षमार्ग प्रकट नहीं होगा। आचार्यदेव राग को आत्मा से भिन्न कहकर पुरुषार्थी बनाना चाहते थे; परन्तु यह जीव स्वच्छंदी होता है, तो यह इसकी महाभूल है।

यहाँ कोई कहे कि आप रागादि को कर्म के निमित्त से हुआ कहते हो तो जब-तक कर्म का उदय रहेगा, तब-तक रागादि रहेंगे; अत: इसके नाश का उपाय करना तो निरर्थक हुआ?

पण्डितजी कहते हैं कि एक कार्य के होने में अनेक कारण होते हैं, उसमें कुछ बुद्धिपूर्वक होते हैं, कुछ अबुद्धिपूर्वक होते हैं। रागादि के साथ में तत्त्वविचार तो बुद्धिपूर्वक उपाय हैं और मोह का क्षय अबुद्धिपूर्वक है; इसलिए तत्त्वज्ञान में उपयोग लगाना चाहिए।

यहाँ कोई कहे कि हम तत्त्वविचार में उपयोग तो लगाना चाहते हैं; लेकिन वह तो क्षयोपशम के आधीन है, हम क्या करें?

पण्डितजी कहते हैं कि यदि तू एक इन्द्रिय पर्याय में होता तो तेरी बात मानते; लेकिन संज्ञी पंचेन्द्रिय अवस्था में तत्त्वविचार में उपयोग लगाने योग्य क्षयोपशम तो होता ही है। यदि तुझे होनहार का दोष लगता है, तो किसी भी कार्य के लिए उद्यम मत करना व्यापारादि में तो सफलता न मिलने पर भी उद्यम करता है और यहाँ होनहार का दोष बताता है, तो यह तेरी झूठी बातें हैं।

इसप्रकार आत्मा में रागादि का अभाव मानते हैं, वे मिथ्यादृष्टि हैं।

4) कर्म और नोकर्म का सम्बन्ध होने पर भी स्वयं को निर्बंध मानता है। यद्यपि शास्त्रों में आत्मा को कर्मों से भिन्न कहा गया है, वह तादात्म्य सम्बन्ध की अपेक्षा से कहा है। सर्वथा भिन्नपना नहीं है। निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध की अपेक्षा तो बन्ध है ही। ज्ञान की हीनाधिकता, शरीरादिक प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं, तो यह कर्म निमित्तक ही है; इसलिए आत्मा को कर्मों से सर्वथा भिन्न मानना योग्य नहीं है।

यहाँ कोई कहे कि शास्त्रों में बन्ध और मुक्ति के विकल्पों को भी अनुचित कहा है, बन्ध का कारण कहा है, वह कैसे?

उससे पण्डितजी कहते हैं कि पर्यायदृष्टि होकर बन्ध-मुक्त अवस्था को मानता है, द्रव्य स्वभाव का ग्रहण नहीं करता तो बन्ध को प्राप्त होता है अर्थात् जो जीव बन्ध और मुक्ति के विकल्पों में उलझे रहते हैं, उनके लिए यह उपदेश है। यदि सर्वथा ही बन्ध और मुक्त ना हो तो यह जीब बन्धता है – ऐसा क्यों कहते और बन्ध के नाश अर्थात् मुक्ति की प्रेरणा क्यों देते?

तात्पर्य यह है कि बन्ध की स्वीकृति पूर्वक यदि मुक्त स्वभाव की श्रद्धा करें, तो ही ये बातें सच्ची है; परन्तु यदि बन्ध की स्वीकृति बिना मुक्त स्वभाव की बात करे, तो सब व्यर्थ है।

इसप्रकार विरूद्ध अभिप्राय ग्रहण कर आत्मा को कर्म-नोकर्म से भिन्न मानना महामिथ्यात्व है।

यहाँ कोई कहे कि शास्त्रों में तो आत्मा के शुद्ध चिन्तन करने का उपदेश दिया जाता है? उसे कहते हैं कि शुद्ध का चिंतन स्वभाव व शक्ति की अपेक्षा से करने का उपदेश है पर्याय अपेक्षा मैं शुद्ध हूँ – ऐसा उपदेश नहीं है। शुद्धपना दो प्रकार का होता है – द्रव्यपने और पर्यायपने। द्रव्य अपेक्षा से तो परद्रव्य से भिन्नता और अपने भावों से अभिन्नता का नाम शुद्धता है और पर्याय अपेक्षा औपाधिक भावों के अभाव का नाम शुद्धता है। जहाँ भी शुद्धता के चिन्तन का उपदेश हो, वहाँ द्रव्य अपेक्षा शुद्धपने का चिंतन समझना।

इसप्रकार निश्चयाभासी जीव की शिथिलाचर पोषक युक्तियाँ और उनका निराकरण किया। **(क्रमश:)**

सप्त दिवसीय जैनदर्शन कार्यशाला सम्पन्न

सांगानेर (राज.) : यहाँ 24 से 30 जनवरी, 2022 तक श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय द्वारा आयोजित '**जैनदर्शन कार्यशाला**' सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई।

कार्यशाला में प्रो. धर्मचंदजी जैन ने 'प्रमाण व्यवस्था' डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने 'प्रत्यक्ष प्रमाण की व्यवस्था' पं. आनंदजी शास्त्री बल्ले ने 'परोक्ष प्रमाण की अवधारणा' प्रो. अशोककुमारजी जैन ने 'द्रव्य व्यवस्था' डॉ. शीतलचंद जैन ने 'गुण की शास्त्रीय मीमांसा' डॉ. शैलेशकुमारजी जैन ने 'पर्याय मीमांसा' एवं पं. अभयकुमारजी शास्त्री ने 'राष्ट्रीय एकता में नय की भूमिका' के स्वरूप को स्पष्ट किया।

यह कार्यशाला श्री एन.के. सेठी, श्री महेशजी चांदवाड़, डॉ. ललितकिशोरजी शर्मा, ब्र. अनिलकुमारजी जैन के निर्देशन एवं डॉ. हितेन्द्रजी जैन एवं डॉ. श्रुतिजी जैन के संयोजन में सम्पन्न हुई।

शोध कार्यशाला सम्पन्न

14 से 16 जनवरी एवं 21 से 23 जनवरी, 2022 तक अर्हत्-वार्ता द्वारा '**शोध**' विषय पर ऑनलाइन वर्कशॉप का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य विद्वानों को शोध के प्रति जागृत करना एवं शोध की गंभीरता से परिचित कराना था।

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के निर्देशन एवं डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली के मार्गदर्शन में कार्यशाला सम्पन्न हुई।

दोपहर में आयोजित सत्रों में पण्डित जिनेशजी शास्त्री मुंबई एवं विदुषी प्रज्ञाजी देवलाली द्वारा शोध का स्वरूप, उसकी नैतिकता, उसको करने का तरीका, लिखने के प्रारूप एवं विषय-वस्तु के चुनाव के सन्दर्भ में महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दी गईं।

कम्प्यूटर लैब उद्घाटन समारोह सानन्द सम्पन्न

खनियांधाना (म.प्र.) : यहाँ 15 जनवरी, 2022 को श्री नंदीश्वर विद्यालय चेतनबाग में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु शान्तिनाथ जिनालय सिंगापुर के अविस्मरणीय सहयोग से बनी आधुनिक सुविधायुक्त कम्प्यूटर लैब का उद्घाटन किया गया।

उद्घाटन समारोह बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री की अध्यक्षता, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के मुख्यातिथ्य एवं श्री अश्विनजी दिल्ली व पण्डित निखिलजी शास्त्री मुम्बई की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के ओजस्वी, हृदयस्पर्शी उद्बोधन के पश्चात् श्री सचिनजी मोदी व प्राचार्य श्री प्रमोदजी जैन ने उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का मंगलाचरण निखिल जैन, संचालन पण्डित दीपकजी शास्त्री, स्वागत भाषण श्री मुकेशजी कोठादार एवं आभार-प्रदर्शन श्री सुनीलजी जैन 'सरल' ने किया।

मुमुक्षु मण्डल के ट्रस्ट का शपथ ग्रहण समारोह

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ 23 जनवरी, 2022 को दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल की नवीन कार्यकारिणी का 'शपथ ग्रहण समारोह' पण्डित श्री राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर की गरिमामय उपस्थिति एवं श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन, श्री शैलेषजी जैन के मुख्यातिथ्य में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर अध्यक्ष श्री अशोककुमारजी जैन, मंत्री श्री संजयकुमारजी जैन, उपाध्यक्ष श्री प्रसन्नकुमारजी जैन, कोषाध्यक्ष श्री विमलकुमारजी जैन, सह-सचिव श्री सुशीलकुमारजी जैन ने शपथ ग्रहण की। तत्पश्चात् श्री रजनीशजी रूपाली, श्री सतीशजी जैन, डॉ. एस.सी. जैन, श्री सुनीलजी पायलवाला ने कार्यकारिणी सदस्य के रूप में शपथ ली।

नए ट्रस्टियों में डॉ. मनोजजी जैन, श्री विरागजी शास्त्री, ब्र. श्रेणिकजी जैन, श्री चन्द्रकुमारजी जैन, श्रीमती सरिताजी जैन, श्रीमती पूजाजी जैन ने कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में शपथ लेते हुये संस्था के विकास के प्रति निरन्तर प्रयत्नशील रहने की भावना भायी।

समयसार : कहान कीर्ति स्तम्भ विराजमान

गुना (म.प्र.) : यहाँ 20 से 22 जनवरी 2022 तक समयसार कहान सम्प्राप्ति शताब्दी वर्ष के अवसर पर वर्द्धमान जिनालय के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में पंचकल्याणक मण्डल विधान एवं समयसार कहान कीर्तिस्तम्भ स्थापित किया गया।

ध्वजारोहण श्री प्रकाशचन्द्रजी वैद्य गुना एवं विधान उद्घाटन जागृति महिला मण्डल द्वारा किया गया। इस समारोह में अध्यात्मवेता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के दोनों समय मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला। कार्यक्रम के अंतिम दिन जिनमंदिर के ऊपर की वेदी पर कीर्तिस्तम्भ का अनावरण श्री अमोलकचन्दजी रावत परिवार ने किया। सम्पूर्ण विधि-विधान पण्डित सुकुमालजी शास्त्री गुना एवं पण्डित अशोकजी शास्त्री मांगुलकर द्वारा सम्पन्न कराए गए।

विशेष प्रवचन

बदरवास (म.प्र.) : यहाँ 19 जनवरी, 2022 को श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मन्दिर ट्रस्ट में विशिष्ट समारोह अयोजित हुआ।

जिनेन्द्र भक्ति से प्रारम्भ इस समारोह में आज्ञा जैन व अन्विता जैन के मंगलाचरण एवं अनन्या जैन के स्वागत गीत के पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त युवाविद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के संयम प्रकाश ग्रन्थ पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

इस अवसर पर उपस्थित समस्त शास्त्री विद्वानों का सम्मान किया गया एवं डॉ. संजीवजी गोधा, पं. विरागजी जबलपुर, पं. अभयकुमारजी जैन एवं पं. राहुलजी शास्त्री ने उद्गार व्यक्त किए।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में आयोजित

पंचदिवसीय ऑनलाइन संगोष्ठियाँ

जयपुर (राज.) : यहाँ 12 से 16 जनवरी, 2022 तक जिनागम के विभिन्न विषयों पर संगोष्ठियों की शृंखला आयोजित हुईं।

(1) 12 जनवरी को **'कर्म सिद्धान्त का सामान्य परिचय'** विषय पर आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. दीपकजी शास्त्री 'वैद्य' जयपुर ने की। मंगलाचरण आयुष जैन उदयपुर ने एवं संचालन दिव्यांश जैन अलवर ने किया। श्रेष्ठ वक्ताओं में अन्विता जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं संयम पुजारी खनियांधाना (शास्त्री तृतीय वर्ष) चुने गए।

(2) 13 जनवरी को **'अनुयोगों का स्वरूप'** विषय पर सम्पन्न गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर रहे। मंगलाचरण संयम नाके डासाला ने एवं संचालन स्वानुभव जैन खनियांधाना व अमन जैन दलपतपुर ने किया। श्रेष्ठ वक्ता आकाश जैन कोटा (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं अरविन्द जैन खड़ैरी (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे।

(3) 14 जनवरी को **'बोधिसमाधि निधानं त्रिपुराणम्'** विषय पर गोष्ठी आयोजित हुई, जिसके अध्यक्ष पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर एवं निर्णायक पण्डित अमनजी शास्त्री लोनी रहे। मंगलाचरण श्रवण उपाध्याय एवं संचालन अभिषेक सदलगे ने किया। विशाल मेहता देवलाली (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं श्रेयांस जैन पिडावा (उपाध्याय कनिष्ठ) श्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में चुने गए।

(4) 15 जनवरी को **'जिनपूजन रहस्य विषय'** पर सम्पन्न गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर एवं निर्णायक पण्डित अखिलजी शास्त्री जयपुर रहे। मंगलाचरण आदर्श जैन फिरोजाबाद ने एवं संचालन मयंक जैन बण्डा व आशुतोष जैन आरोन ने किया। श्रेष्ठ वक्ता श्रवण उपाध्याय (उपाध्याय कनिष्ठ), शाश्वत जैन भोपाल एवं सुष्मित जैन सेमारी (शास्त्री तृतीय वर्ष) थे।

(5) 16 जनवरी को **'समयसार कर्ताकर्म मीमांसा'** विषय पर आयोजित गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर रहे। मंगलाचरण संयम पुजारी खनियांधाना ने एवं संचालन समकित जैन ईसागढ़ ने किया। गोष्ठी में प्रथम स्थान पर दीपक जैन मझगुवाँ (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं द्वितीय स्थान पर स्वानुभव जैन खनियांधाना तथा भव्या जैन दिल्ली (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे।

उक्त गोष्ठियों का आभार प्रदर्शन उपप्राचार्य पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर तथा संयम पुजारी खनियांधाना ने किया।

ज्ञातव्य है कि सत्र 2021-22 में सम्पन्न सभी गोष्ठियों का संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष से शाश्वत जैन भोपाल, संयम पुजारी खनियांधाना, स्वानुभव जैन खनियांधाना एवं सुष्मित जैन सेमारी ने सफलतापूर्वक किया।

23वाँ JAANA शिविर संपन्न

जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका के तत्त्वावधान में 22 से 24 जनवरी, 2022 तक अमेरिका और कनाडा के विविध प्रांतों में फैले हुए आत्मार्थी मुमुक्षुओं के लिए 23वाँ शिविर ऑनलाइन माध्यम से सम्पन्न हुआ।

शिविर में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा प्रतिदिन प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: पूजन विधान एवं दोपहर में बालकों द्वारा विशेष प्रस्तुति दी गई।

सम्पूर्ण शिविर JAANA के डायरेक्टर श्री अतुलभाई–चारुजी खारा, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, श्री पौरांग–निकेताजी पारेख, श्रीमती रोशनीजी सेठी एवं श्री अनंत–ऋचाजी पाटनी के निर्देशन में हुआ, जिसमें श्री क्षितिज–शीतलजी शाह का विशेष सहयोग रहा।

वैराग्य समाचार

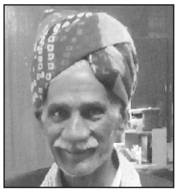

1) जयपुर निवासी **श्री नेमिचन्दजी गोधा** का 15 जनवरी, 2022 को 83 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया है। ज्ञातव्य है कि आपने आजीवन पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट में सेवाएँ प्रदान कर जिनवाणी को घर–घर तक पहुँचाने का महान कार्य किया है। आपकी स्मृति में आपके परिवार द्वारा ट्रस्ट को 500 रूपये की राशि प्राप्त हुई एवं 18 जनवरी को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई।

2) **श्री कनुभाई मूलचन्दजी दोशी** का 21 जनवरी, 2022 को प्रात:काल शांत परिणामों सहित देह परिवर्तन हो गया है। विदित है कि आपने गुरुदेवश्री द्वारा प्रसारित तत्त्वज्ञान का भरपूर लाभ लिया। आप कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट के महामंत्री श्री बसन्तभाई दोशी, मुम्बई के लघुभ्राता थे।

3) सूरत निवासी **श्री सुनीलकुमारजी** पुत्रश्री धनकुमारजी गोधा का 17 जनवरी 2022 को 67 वर्ष की आयु में देह परिवर्तन हो गया है। तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान रहता था। आपकी स्मृति में वीतराग–विज्ञान एवं जैन पथप्रदर्शक हेतु 21-2100 रुपये की राशि प्राप्त हुई; एतदर्थ धन्यवाद।

4) **सोनगढ़ निवासी** ब्रह्मचारी विमलाबेन का 25 जनवरी 2022 को विशुद्ध परिणामों सहित देह वियोग हो गया है। आप गुरुदेवश्री के समागम में धर्मसाधना करने वाली आत्मार्थी महिला थी।

दिवंगत आत्माएँ शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों– यही कामना है।

द्वितीय शतक : रोला शतक

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

ज्ञान ज्ञेय – दोनों बातें हैं आत्मतत्त्व में।
सभी अनातम भाव अकेले ज्ञेय भाव हैं।।
पर ज्ञेयों से भिन्न आतमा ज्ञानस्वभावी।
परम तत्त्व निज आतम ज्ञानानन्द स्वभावी।। २७।।

अरे देह में रहकर भी यह देह नहीं है।
यद्यपि इसमें राग किन्तु यह राग नहीं है।।
पर्यायों से पार आतमा ज्ञान पिण्ड है।
गुणभेदों से भिन्न प्रभु अति ही प्रचण्ड है।। २८।।

अरे ज्ञानघनपिण्ड आतमा निर्विकल्प है।
आनन्द का रसकन्द आतमा परमतत्त्व है।।
निर्विकल्प यह जीव विकल्पों में नहीं आता।
आतम अनुभवगम्य अतः अनुभव में आता।। २९।।

करो भावना अरे निरन्तर भेदज्ञान की।
भेदज्ञान की महिमा में नित चित्त लगाओ।।
अविरल धारा बहे ज्ञान में भेदज्ञान की।
भव्य भावना रहे ध्यान में भेदज्ञान की।। ३०।।

भेदज्ञान के इस अविरल धारा प्रवाह से।
कैसे भी कर प्राप्त करे जो शुद्धातम को।।
और निरन्तर उसमें ही थिर होता जावे।
पर परिणति को त्याग निरन्तर शुध हो जावे।। ३१।।

भेदज्ञान की शक्ति से निजमहिमा रत को।
शुद्धतत्त्व की उपलब्धि निश्चित हो जावे।।
शुद्धतत्त्व की उपलब्धि होने पर उसके।
अतिशीघ्र ही सब कर्मों का क्षय हो जावे।। ३२।।

आत्मतत्त्व की उपलब्धि हो भेदज्ञान से।
आत्मतत्त्व की उपलब्धि से संवर होता।।
इसीलिए तो सच्चे दिल से नितप्रति करना।
अरे भव्यजन! भव्यभावना भेदज्ञान की।। ३३।।

अरे भव्यजन! भव्यभावना भेदज्ञान की।
सच्चे मन से बिन विराम के तब तक भाना।।
जब तक पर से हो विरक्त यह ज्ञान ज्ञान में।
ही थिर न हो जाय अधिक क्याकहें जिनेश्वर।। ३४।।

अब तक जो भी हुए सिद्ध या आगे होंगे।
महिमा जानो एक मात्र सब भेदज्ञान की।।
और जीव जो भटक रहे हैं भवसागर में।
भेदज्ञान के ही अभाव से भटक रहे हैं।। ३५।।

भेदज्ञान से शुद्धतत्त्व की उपलब्धि हो।
शुद्धतत्त्व की उपलब्धि से रागनाश हो।।
रागनाश से कर्मनाश अर कर्मनाश से।
ज्ञान ज्ञान में थिर होकर शाश्वत हो जावे।। ३६।।

मुक्तिमार्ग यह बतलाया अरहन्त देव ने।
यह उपलब्ध सदा हमको है जिनवाणी में।।
गहराई से पढ़ें मनन चिन्तन कर समझें।
समझ न आवे तो ज्ञानी गुरुओं से समझें।। ३७।।

मुक्तिमार्ग के नेता ज्ञाता विश्व तत्त्व के।
वस्तु का स्वरूप समझाते दिव्यध्वनि से।।
हित उपदेशक अनेकान्त के स्याद्वाद के।
परम वीतरागी होते अरहन्तदेव हैं।। ३८।।

अनेकान्तमय सप्त तत्त्व की प्रतिपादक अर।
वीतरागता की पोषक जो जिनवर वाणी।।
परम अहिंसक सदाचार की भी पोषक जो।
अरिहन्तों की दिव्यध्वनि वह जिनवाणी है।। ३९।।

(क्रमशः)

प्रश्नोत्तरमाला (समयसार अनुशीलन के आधार से)

15

– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न 133 - क्या आत्मानुभव के बिना द्वादशांग के पाठी श्रुतकेवली हो सकते हैं?

उत्तर – नहीं, आत्मानुभव के बिना ग्यारह अंग और नौ पूर्व तक का ही ज्ञान होता है, द्वादशांग का नहीं। अत: द्वादशांग के पाठी श्रुतकेवली आत्मानुभवी ही होते हैं।

प्रश्न 134 – क्या निश्चय श्रुतकेवली और व्यवहार श्रुतकेवली दो अलग–अलग व्यक्ति हो सकते हैं? कारण बताओ।

उत्तर – नहीं, निश्चय श्रुतकेवली और व्यवहार श्रुतकेवली दो अलग–अलग व्यक्ति नहीं हो सकते, वे एक ही होते हैं, क्योंकि आत्मानुभव के कारण जिन्हें निश्चय श्रुतकेवली कहते हैं, द्वादशांग के पाठी होने के कारण उन्हें ही व्यवहार श्रुतकेवली कहते हैं। निश्चय और व्यवहार – ये दोनों ही नय एकसाथ एक ही समय में एक ही व्यक्ति पर घटित होते हैं, अन्य–अन्य व्यक्तियों पर नहीं, अन्य–अन्य समयों पर भी नहीं। निश्चय श्रुतकेवली और व्यवहार श्रुतकेवली में न व्यक्ति भेद है और न समय भेद ही।

प्रश्न 135 – निश्चय और व्यवहार श्रुतकेवली कौन–कौनसे गुणस्थानों में हो सकते हैं?

उत्तर – ये दोनों श्रुतकेवली चौथे से बारहवें गुणस्थान तक ही होते हैं, उसके पहले और बाद में नहीं; क्योंकि तेरहवें गुणस्थान वाले तो केवली हो जाते हैं और मिथ्यादृष्टि जीव न तो द्वादशांग के पाठी होते हैं और न ही आत्मज्ञानी हो सकते हैं।

प्रश्न 136 – क्या अन्य गतियों में भी द्वादशांग के पाठी हो सकते हैं?

उत्तर – हाँ, देवगति में सौधर्म इन्द्र आदि, लौकान्तिक देव एवं सर्वार्थसिद्धि आदि के अहमिन्द्र भी द्वादशांग के पाठी और आत्मानुभवी होते हैं।

प्रश्न 137 – व्यवहार नय का अनुसरण क्यों नहीं करना चाहिए?

उत्तर – व्यवहार नय के आश्रय से सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति नहीं होती, इसलिए व्यवहार नय का अनुसरण नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 138 – यदि व्यवहार नय अनुसरण करने योग्य नहीं है तो फिर इसका उपदेश ही क्यों दिया जाता है?

उत्तर – व्यवहार नय सर्वथा निषेध करने योग्य नहीं है, क्योंकि यह नय कभी–कभी किन्हीं–किन्हीं को प्रयोजनवान होता है, अत: इसका उपदेश दिया जाता है।

प्रश्न 139 – व्यवहार नय किन–किन को और कब प्रयोजनवान है?

उत्तर – साधक अवस्था में जीवों को जब तक साक्षात् शुद्धात्मा की प्राप्ति न हो तब तक व्यवहार नय उस काल जाना हुआ प्रयोजनवान है।

प्रश्न 140 – परमभाव और अपरमभाव को कितने प्रकार से घटित कर सकते हैं और कैसे?

उत्तर – इन भावों को तीन प्रकार से घटित कर सकते हैं –

(1) श्रद्धा की अपेक्षा – सम्यग्दृष्टि ज्ञानी पुरुष परम भाव में ही स्थित हैं और अज्ञानी मिथ्यादृष्टि अपरमभाव में स्थित हैं।

(2) शुभोपयोग और शुद्धोपयोग की अपेक्षा– अनुभव के काल में शुद्धोपयोग की अपेक्षा चौथे, पाँचवें और सातवें गुणस्थानवर्ती परम भाव में स्थित हैं तथा शुभोपयोग के काल में चौथे, पांचवें और छठवें गुणस्थानवर्ती अपरमभाव में स्थित हैं।

(3) वीतरागी सर्वज्ञ और छद्मस्थ की अपेक्षा – तेरहवें गुणस्थान से लेकर आगे के सभी वीतरागी सर्वज्ञ परमभाव में स्थित हैं और बारहवें गुणस्थान तक के सभी ज्ञानी अज्ञानी छद्मस्थ अपरमभाव में स्थित हैं।

प्रश्न 141 – व्यवहार के बिना तीर्थ का और निश्चय के बिना तत्त्व का नाश किस प्रकार हो जायेगा? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – यहाँ तीर्थ का अर्थ उपदेश और तत्त्व का अर्थ शुद्धात्मा का अनुभव है। उपदेश की प्रक्रिया प्रतिपादन द्वारा संपन्न होती है तथा प्रतिपादन करना व्यवहार का काम है, अत: व्यवहार को सर्वथा असत्यार्थ मानने से तीर्थ का लोप हो जायेगा।

शुद्धात्मा का अनुभव निश्चय नय के विषयभूत अर्थ में एकाग्र होने पर होता है, अत: निश्चय नय को छोड़ने पर तत्त्व की प्राप्ति नहीं होगी।

प्रश्न 142 – 'जिनवचनों में रमण करते हैं' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – आत्मकल्याण की भावना से जिनवाणी का अत्यंत रुचिपूर्वक स्वाध्याय करना, पढना, पढाना, लिखना, लिखाना, उसके अर्थ का विचार करना, मंथन करना, परस्पर चर्चा करना, प्रश्नोत्तर करना आदि व्यवहार से जिनवचनों में रमण करना है और जिनवाणी में प्रतिपादित शुद्धात्मवस्तु का अनुभव करना निश्चय से जिनवचनों में रमण करना है।

प्रश्न 143 – व्यवहार जिनवचनों में रमण करना कौनसी लब्धि का प्रतीक है?

उत्तर – देशना लब्धि का प्रतीक है।

प्रश्न 144 – निश्चय जिनवचनों में रमण करना कौनसी लब्धि का प्रतीक है?

उत्तर – करण लब्धि का प्रतीक है।

(क्रमश:)

कहान समयसार सम्प्राप्ति शताब्दी वर्ष के अवसर पर...

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का तूफानी दौरा

आरोन पंचकल्याणक एवं **इंदौर** में इन्द्रध्वज विधान के उपरान्त 1 जनवरी को **किशनगढ़** में प्रवचन, 3 व 4 जनवरी को **करहल, फिरोजाबाद** व **आगरा (उ.प्र.)** में विधान व प्रवचन, 9 से 14 जनवरी तक **कोलारस (म.प्र.)** में कल्पद्रुम मण्डल विधान एवं प्रवचन, 15 जनवरी को प्रात: **रन्नौद (म.प्र.)** में प्रवचन, दोपहर में **खनियांधाना** में कम्प्यूटर लैब का उद्घाटन एवं प्रवचन, 16 से 19 जनवरी तक **शिवपुरी** में समयसार कलश विधान, कीर्तिस्तम्भ स्थापना एवं प्रवचन, 19 जनवरी रात्रि को **बदरवास (म.प्र.)** में प्रवचन, 20 से 22 जनवरी तक **गुना (वीतराग-विज्ञान)** में कीर्तिस्तम्भ स्थापना एवं प्रवचन, 22 व 23 जनवरी को **कोटा** में प्रवचन, 22 से 24 जनवरी को **JAANA** शिविर में प्रवचन एवं 25 जनवरी को संस्कृत कॉलेज **सांगानेर** में सेमिनार - सभी स्थानों पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा **समयसार** एवं **संयमप्रकाश** पर प्रतिदिन दोनों समय प्रवचनों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई।

गणतंत्र दिवस समारोह सम्पन्न

जयपुर : यहाँ 26 जनवरी, 2022 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट में श्री सुशीलकुमारजी गोदीका, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, पं. पीयूषजी शास्त्री, पं. श्रीमंतजी नेज एवं श्री अश्विनीजी की उपस्थिति में ध्वज फहराया गया।

समारोह में डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील एवं पं. पीयूषजी शास्त्री ने गणतंत्र के दार्शनिक एवं आध्यात्मिक महत्त्व हो स्पष्ट किया।

साथ ही अभिषेक जैन देवराहा ने काव्य-पाठ, आयुष जैन उदयपुर ने संविधान लेखन में जैनों के योगदान का स्मरण किया। संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

रात्रि में भारतीय संविधान एवं जैन संविधान की तुलना करते हुए डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का प्रासंगिक मार्मिक प्रवचन हुआ।

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित

दसवाँ वार्षिक महोत्सव

(शुक्रवार, दिनांक 25 फरवरी से रविवार 27 फरवरी, 2022 तक)

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में आयोजित **पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का दसवाँ वार्षिक महोत्सव 25 फरवरी से 27 फरवरी, 2022 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस त्रिदिवसीय महोत्सव में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा आदि अनेक विद्वानों के प्रवचन एवं प्रवचनसार मण्डल विधान के माध्यम से अपूर्व लाभ प्राप्त होगा।

कार्यक्रम का आप सभी साधर्मीजन PTST.LIVE के माध्यम से ऑनलाइन लाभ ले सकेंगे।

इस मंगल अवसर पर लाभ लेने हेतु आप सभी को भावभीना आमंत्रण है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो-वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाइट - **www.vitragvani.com**
संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब **vitragvani** एप पर भी उपलब्ध है।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 जनवरी 2022

प्रति,